अंक -48 माह –मार्च सत्र-२०२२-२०२३

उड़ान

भाऊराव देवरस सरस्वती विद्या मंदिर

एच-107,सैक्टर -12, नॉएडा

विद्यालय ई-पत्रिका विमोचन

आज दिनांक 1 मार्च को विद्यालय की ई-पत्रिका का विमोचन किया गया |इस पत्रिका ने पूरे माह विद्यालय में हुई सभी गतिविधियों की जानकारी होती है | इस माह की पत्रिका विमोचन के समय प्रधानाचार्य श्रीमान पंकज शर्मा जी, आचार्य अमित आमोद जी, ज्ञान प्रकाश जी, हेमचंद जी, कुलदीप शर्मा जी आशा दुआ जी तथा आचार्य दयाशंकर जी उपस्थित थे |

होली पर्व कार्यक्रम

होली वसंत ऋतु में मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण भारतीय त्यौहार है। यह पर्व हिंदू पंचांग के अनुसार फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है।

होली रंगों का तथा हँसी-खुशी का त्योहार है। यह भारत का एक प्रमुख और प्रसिद्ध त्योहार है, जो आज विश्वभर में मनाया जाने लगा है। रंगों का त्यौहार कहा जाने वाला यह पर्व पारंपरिक रूप से दो दिन मनाया जाता है। यह प्रमुखता से भारत तथा नेपाल में मनाया जाता है। यह त्यौहार कई अन्य देशों जिनमें अल्पसंख्यक हिन्दू लोग रहते हैं वहाँ भी धूम-धाम के साथ मनाया जाता है। पहले दिन को होलिका जलायी जाती है, जिसे होलिका दहन भी कहते हैं। दूसरे दिन, जिसे प्रमुखतः धुलेंडी व धुरड्डी, धुरखेल या धूलिवंदन इसके अन्य नाम हैं, लोग एक दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल इत्यादि फेंकते हैं, ढोल बजा कर होली के गीत गाये जाते हैं और घर-घर जा कर लोगों को रंग लगाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि होली के दिन लोग पुरानी कटुता को भूल कर गले मिलते हैं और फिर से दोस्त बन जाते हैं। एक दूसरे को रंगने और गाने-बजाने का दौर दोपहर तक चलता है। इसके बाद स्नान कर के विश्राम करने के बाद नए कपड़े पहन कर शाम को लोग एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं, गले मिलते हैं और मिठाइयाँ खिलाते हैं।

राग-रंग का यह लोकप्रिय पर्व वसंत का संदेशवाहक भी है। राग अर्थात संगीत और रंग तो इसके प्रमुख अंग हैं ही पर इनको उत्कर्ष तक पहुँचाने वाली प्रकृति भी इस समय रंग-बिरंगे यौवन के साथ अपनी चरम अवस्था पर होती है। फाल्गुन माह में मनाए जाने के कारण इसे फाल्गुनी भी कहते हैं। होली का त्यौहार वसंत पंचमी से ही आरंभ हो जाता है। उसी दिन पहली बार गुलाल उड़ाया जाता है। इस दिन से फाग और धमार का गाना प्रारंभ हो जाता है। खेतों में सरसों खिल उठती है। बाग-बगीचों में फूलों की आकर्षक छटा छा जाती है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और मनुष्य सब उल्लास से परिपूर्ण हो जाते हैं। खेतों में गेहूँ की बालियाँ इठलाने लगती हैं। बच्चे-बूढ़े सभी व्यक्ति सब कुछ संकोच और रूढ़ियाँ भूलकर ढोलक-झाँझ-मंजीरों की धुन के साथ नृत्य-संगीत व रंगों में डूब जाते हैं। चारों तरफ़ रंगों की फुहार फूट पड़ती है। गुझिया होली का प्रमुख पकवान है जो कि मावा (खोया) और मैदा से बनती है और मेवाओं से युक्त होती है इस दिन कांजी के बड़े खाने व खिलाने का भी रिवाज है। नए कपड़े पहन कर होली की शाम को लोग एक दूसरे के घर होली मिलने जाते है जहाँ उनका स्वागत गुझिया,नमकीन व ठंडाई से किया जाता है। होली के दिन आम्र मंजरी तथा चंदन को मिलाकर खाने का बड़ा माहात्म्य है।

विद्यालय परिवार ने रंगों का यह त्यौहार दिनांक 5 मार्च को "परिवार मिलन" के रूप में मनाया गया | विद्यालय प्रबंध समिति की ओर से सभी आचार्य /आचार्याओं एवं कर्मचारी भैया-बहनों के परिवार को इस कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया | कार्यक्रम में आचार्य नीरज जी ने अपने उद्बोधन में होली पर्व को मनाने के पीछे चली आ रही कथाओं का वर्णन किया और सभी को शुभकामनाएं प्रेषित की | आचार्या कीर्ति जी, शिखा जी, अल्पना जी ने अपनी प्रस्तुतियों से सभी का मन मोह लिया | आचार्य अमित आमोद जी, अमित पाठक जी, ज्ञानप्रकाश जी,दया जी और हेमचंद जी ने अपने होली भजनों पर सभी को थिरकने के लिए मजबूर कर दिया |

HAPPY होली

वार्षिक परीक्षा परिणाम

आज सत्र 2022-23 का वार्षिक परीक्षा परिणाम घोषित किया गया, जिसमें सभी कक्षाओं के सभी वर्गों से प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त भैय्या बहिनों को पुरुस्कार दिया गया। शत -प्रतिशत उपस्तिथि वाले भैय्या- बहिनों को भी पुरस्कार प्रदान किया गया।

नवीन प्रधानाचार्य स्वागत कार्यक्रम

आज दिनांक 31 मार्च २०२३ को विद्यालय के नवीन प्रधानाचार्य श्री सोम गिरी जी ने अपना कार्यभार संभाल लिया | इस अवसर पर एक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें नवीन प्रधानाचार्य जी के साथ विद्यालय प्रबंध समिति के व्यवस्थापक श्रीमान रजनीश जी उपस्थित रहे | आचार्य मनोज जी ने उनका परिचय करवाया और आचार्य राजेश जी व कार्यालय प्रमुख श्रीमान ओमवीर जी ने पुष्पगुच्छ देकर उनका स्वागत किया |

सुविचार

जो सत्य से असत्य को अलग कर सकती है,
गलत और सही में अंतर कर सकती है।
बुद्धि के इसी धर्म का नाम विवेक है।